

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं।

Vol -21
Issue - 11

राह-ए-ईमान

नवम्बर
2019 ई०

ज्ञान और कर्म का इस्लामी दर्पण



सम्पादक
फ़रहत अहमद आचार्य

उप सम्पादक

सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

इब्नुल मेहदी लईक M.A.

कम्पोज़िंग टाइप सेटिंग

फ़रहत अहमद आचार्य

टाइटल डिज़ाइन

आर महमूद अब्दुल्लाह

मैनेजर

अतहर अहमद शमीम M.A.

कार्यालय प्रभार

सय्यद हारिस अहमद

अनीस अहमद असलम

विषय सूचि

1. पवित्र कुरआन.....	2
2. पवित्र हदीस	2
3. हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी.....	3
4. रूहानी ख़ज्जायन.....	4
5. सम्पादकीय.....	6
6. सारांश ख़ुत्व: जुम्अ: 05-07-2019.....	8
7. इस्लामी राजकीय प्रबंधन.....	13
8. ईमान वर्धक वृत्तान्त (हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहू तआला के बारे में)	18
9. सिलसिला अहमदिया (जिल्द-1).....	21
10. फर्मुदात.....	23
11. मिर्कातुल यक्रीन फी हयाते नूरुद्दीन (ख़लीफा अव्वल की जीवनी).....	25
12. वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है.....	28
13. दीनी मालूमात.....	32



पत्र व्यवहार के लिए पता :-

सम्पादक राह-ए-ईमान, मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत,
क्रादियान - 143516 ज़िला गुरदासपुर, पंजाब।

Editor Rah-e-Iman, Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat,

Qadian - 143516, Distt. Gurdaspur (Pb.)

Fax No. 01872 - 220139, Email : rahe.imaan@gmail.com

लेखकों के विचार से अहमदिया मुस्लिम
जमाअत का सहमत होना ज़रूरी नहीं

वार्षिक मूल्य: 130 रुपए

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat Qadian and Printed at Fazole Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Khuddamul Ahmadiyya Bharat, P.O. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab INDIA. Editor Farhat Ahmad

पवित्र कुरआन

(अल्लाह तआला के कथन)

अनुवाद:- और यदि तुम में से कोई किसी दूसरे के पास अमानत रखे तो जिस के पास अमानत रखवाई गई है उसे चाहिए कि वह उसकी अमानत को अवश्य वापस करे और अपने रब्ब अल्लाह का संयम धारण करे, और तुम गवाही को न छुपाओ और जो कोई भी उसे छुपाएगा तो निश्चित रूप से उसका दिल पापी हो जाएगा और जो तुम करते हो अल्लाह उसे भली भांति जानता है। (अल बक्रर: - 284)

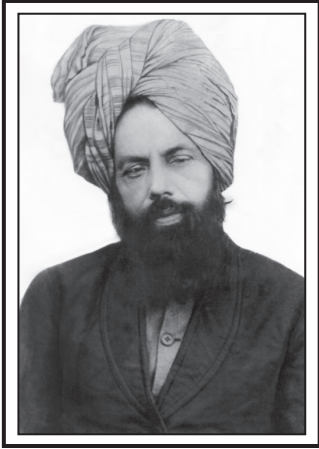
पवित्र हदीस

(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कथन)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद बयान करते हैं कि चटाई पर लेटने के कारण आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के शरीर पर निशान पड़ गए थे। मैंने यह देखकर निवेदन किया कि हमारी जान आप पर कुर्बान हो अगर आप अनुमति दें तो हम इस चटाई पर कोई गद्दा आदि बिछा दें जो आपको इसके खुरदरेपन से बचाए। यह सुनकर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया- मुझे सांसारिक आरामों से क्या लेना। मैं तो केवल एक मुसाफिर के समान हूँ जो कुछ देर सुस्ताने के लिए एक छायादार वृक्ष के नीचे बैठ जाता है और फिर उसे छोड़ कर अपने सफ़र पर रवाना हो जाता है।

(सहीह बुख़ारी)





हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की अमृतवाणी

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद
अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

नबियों (अवतारों) के चमत्कारों का उद्देश्य

"इस्लाम का ख़ुदा बड़ा शक्तिशाली ख़ुदा है किसी को अधिकार नहीं है कि उसकी शक्तियों पर ऐतराज़ करे। अंबिया अलैहिमुस्सलाम को जो चमत्कार दिए जाते हैं उसका कारण यही है कि इंसान का अनुभव पहचान नहीं कर सकता और जब इंसान विलक्षण बातों को देखता है तो एक बार तो

यह कहने पर विवश हो जाता है कि वह ख़ुदा तआला की ओर से है परंतु यदि अपनी बुद्धि का दावा करे और ख़ुदा से समझने की शक्ति न मांगे तो दोनों ओर से मार्ग बंद हो जाता है। एक ओर चमत्कारों का इंकार दूसरी ओर तुच्छ बुद्धि का दावा। जिसका परिणाम यह होता है कि उन बारीक से बारीक वस्तुओं को पहचानने की चिंता में वह मूर्ख इंसान लग जाता है जो चमत्कारों की गहराई में है और जिसकी फिलासफी इंसानी बुद्धि और ऊपरी विचारों पर नहीं खुल सकती। इससे वह इंकार की ओर लौटते लौटते नबूवत का ही इंकारी हो जाता है और शंकाओं और संदेशों का एक बहुत सा ढेर जमा कर लेता है जो उसकी दुर्भाग्य का कारण होकर रहता है। कभी यह कह देता है कि यह भी हमारे जैसा सामान्य व्यक्ति है जो खाता है पीता है और मानवीय आवश्यकता रखता है, उसकी शक्तियां हमसे कैसे बढ़ सकती हैं, उसकी शक्तियों में आध्यात्मिकता की शक्ति और दुआओं में स्वीकारिता का प्रभाव क्यों विशेष रूप से आ जाएगा? अफ़सोस इस प्रकार की बातें बनाते और ऐतराज़ करते हैं जिसके कारण जैसा मैंने अभी कहा नबूवत का ही इन्कार कर देते हैं। सोचने और समझने का स्थान है कि सामान्य तौर पर तो मानते नहीं और असामान्य रूप पर ऐतराज़ करते हैं। अब यह जानबूझ कर अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वजूद का इन्कार नहीं तो क्या है? क्या इन्हीं बुद्धि और विवेकों पर गर्व है कि फिलॉस्फ़र कहला कर अधर्मी अथवा मूर्ति पूजक हो गए। अल्लाह तआला की छुपी हुई शक्तियां कभी इल्हाम और वह्यी के सिवा अपना चमत्कार नहीं दिखा सकतीं। वह वह्यी और इल्हाम ही के रूप में नज़र आती हैं।"

(मल्फूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 78)



रूहानी खज़ायन

'शिक्षा' (पुस्तक 'कश्ती नूह' से उद्धृत)

(अहमदियत की शिक्षाओं का सारांश)

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

.....और इंजीलों में शालीन व्यक्तियों और ग़रीबों और असहायों की सराहना की गई है और उनकी सराहना जो सताए जाते हैं और मुकाबला नहीं करते परन्तु कुर्आन केवल यही नहीं कहता कि तुम हर समय दीन-हीन बने रहो और बुराई का मुकाबला न करो। बल्कि कहता है कि शालीनता, दीनता, निर्धनता और मुकाबले का त्याग करना अच्छा है परन्तु इनका इस्तेमाल यदि अनुपयुक्त अवसर पर किया जाए तो बुरा है। अतः तुम प्रत्येक पुण्य को अवसर और समयानुसार करो क्योंकि वह पुण्य पाप है, जो अवसर और समय के प्रतिकूल है। जैसा कि तुम देखते हो कि वर्षा कितनी अच्छी और आवश्यक वस्तु है, परन्तु यदि वह समय के अनुरूप न हो तो वही बर्बादी का कारण बन जाती है या तुम देखते हो कि एक ही प्रकार के ठंडे या गर्म भोजन के निरन्तर सेवन से तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक नहीं रह सकता, स्वास्थ्य तभी ठीक रहेगा जबन कि तुम्हारे भोजन में अवसर और समय के अनुरूप परिवर्तन होता रहे। अतः कठोरता और विनम्रता, क्षमा करना और बदला लेना, दुआ और श्राप तथा अन्य सदाचारों में जो तुम्हारे लिए समय की पुकार है, वे भी इसी परिवर्तन को चाहते हैं। श्रेष्ठतम, शालीन और विनम्र बनो परन्तु अनुपयुक्त स्थान और अनुपयुक्त अवसर पर नहीं। इसके साथ यह भी स्मरण रखो कि सच्ची और उच्चकोटि की नैतिकता जिसके साथ स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों की कोई विषाक्त मिलावट नहीं वह ऊपर से रूहुलकुदुस द्वारा आती है। अतः तुम इन श्रेष्ठतम सदाचारों को मात्र अपने प्रयासों से प्राप्त नहीं कर सकते जब तक तुमको ऊपर से वह सदाचार प्रदान न किए जाएँ। प्रत्येक जो आकाशीय प्रकाश से रूहुलकुदुस द्वारा सदाचार से हिस्सा नहीं पाता वह सदाचार के दावे में झूठा है और उसके पानी के नीचे बहुत सारा कीचड़ और गोबर है, जो तामसिक आवेगों के समय प्रकट होता है। अतः तुम ख़ुदा से हर समय शक्ति मांगो ताकि उस कीचड़ और गोबर से मुक्ति पाओ और रूहुलकुदुस तुम में वास्तविक पवित्रता और उदारता पैदा करे। स्मरण रखो कि सच्चा और पवित्र आचरण सत्यवादियों का चमत्कार है जिनमें कोई अन्य भागीदार नहीं। क्योंकि वे जो ख़ुदा में लीन नहीं होते वह ऊपर से शक्ति नहीं पाते। इसलिए उनके लिए संभव नहीं कि वह पवित्र आचरण प्राप्त कर सकें। अतः तुम अपने ख़ुदा से पवित्र संबंध

स्थापित करो। हंसी-ठट्ठा, गाली-गलोज, मोह, झूठ, कुकर्म, बुरी दृष्टि, बुरे विचार, दुनिया की उपासना, अभिमान, अंहकार, स्वयं को श्रेष्ठ समझना, उद्दण्डता, निरुद्देश्य विवाद सब त्याग दो, फिर यह सब कुछ तुम्हें आकाश से प्राप्त होगा। जब वह उच्च और श्रेष्ठ शक्ति जो तुम्हें ऊपर की ओर खींच कर ले जाए तुम्हारे साथ न हो और रुहुलकुदुस जो जीवन प्रदान करता है तुम में प्रवेश न करे तब तक तुम बहुत ही निर्बल और अन्धकार में पड़े हुए हो, बल्कि एक मुर्दा हो जिसमें जान नहीं। इस दशा में न तो तुम किसी मुसीबत का सामना कर सकते हो और न ही उन्नति और न ही धनधान्य से परिपूर्ण होने की दशा में अंहकार और अभिमान से सुरक्षित रह सकते हो। हर एक पहलू से तुम शैतान और स्वयं के दास हो। अतः तुम्हारी चिकित्सा तो वास्तव में एक ही है कि रुहुलकुदुस जो अल्लाह की विशेष मेहरबानी से उतरता है तुम्हारा मुख सच्चाई और पुण्यों की ओर फेर दे। तुम आकाशीय बेटे बनो न कि धरती के बेटे, प्रकाश के उत्तराधिकारी बनो न कि अन्धकार के प्रेमी ताकि तुम शैतान के मार्गों से अमन में आ जाओ क्योंकि शैतान का लक्ष्य हमेशा रात है दिन उसका लक्ष्य नहीं। वह पुराना चोर है जो हमेशा अन्धकार में क्रदम रखता है। सूरह फ़ातिहः मात्र शिक्षा ही नहीं अपितु उसमें एक बड़ी भविष्यवाणी भी निहित है और वह यह है कि ख़ुदा ने अपनी चारों विशेषताओं पालन-पोषण करने, कर्मों के प्रतिफल देने, कर्मों के बिना देने, प्रतिफल और दण्ड विधान का उल्लेख करके अपनी सामान्य शक्ति को प्रकट करके उसके बाद वाली आयतों में यह दुआ सिखाई है कि हे ख़ुदा तू ऐसा कर कि हम अपने पूर्व सच्चे नबियों, पैगम्बरों के उत्तराधिकारी ठहराए जाएँ, उनका मार्ग हम पर खोला जाए, उन पर होने वाली अनुकम्पाएं हमें प्रदान की जाएँ। हे ख़ुदा हमें उन लोगों में सम्मिलित होने से बचा जिन पर इसी संसार में तेरा प्रकोप आया अर्थात् यहूदी जाति जो हज़रत ईसा के काल में थी जिसका विनाश प्लेग द्वारा हुआ, और हमें इससे सुरक्षित रख कि हम उस कौम में से हो जाएँ जिनके साथ तेरा पथ-प्रदर्शन नहीं हुआ और वह पथभ्रष्ट हो गई अर्थात् ईसाई। इस प्रार्थना में यह भविष्यवाणी निहित है कि मुसलमानों में से कुछ ऐसे होंगे जो अपनी सच्चाई और पवित्रता के उपलक्ष्य पहले नबियों के उत्तराधिकारी हो जाएँगे और नुबूव्वत और पैगाम्बरियत की अनुकम्पाएं प्राप्त करेंगे और उनमें से कुछ ऐसे होंगे कि वे विशेषताओं में यहूदियों के समान हो जाएँगे जिन पर इस संसार में ही प्रकोप आएगा, और कुछ ऐसे होंगे कि वह ईसाइयत के रंग में रंगीन हो जाएँगे। (शेष....)



सम्पादकीय हमारा स्वर्ग हमारा खुदा है

खुदा तआला की हस्ती की सही पहचान करना और उस पर ईमान लाना इन्सान की ज़िन्दगी का असल मकसद है जिसके बिना न इस जीवन का उद्देश्य पूर्ण होता है और न धर्म का। इस दौर में जो कि भौतिकवाद का दौर है, हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौज़द और महदी माहूद अलैहिस्सलाम ने हमें उस खुदा की पहचान करवाई है कि वह क्या है, कैसा है और कैसे मिल सकता है। इसके लिए हमें पुस्तक "अल्लाह तआला- जल्लाशानुहू" अवश्य पढ़नी चाहिए जो क़ादियान से प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत हैं इस पुस्तक के कुछ उद्धरण:-

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फरमाते हैं- "खुदा की हस्ती परोक्ष से परोक्ष (ग़ैबुलग़ैब) और दूर से दूर तथा नितान्त गुप्त है जिसे मानव बुद्धियाँ मात्र अपनी शक्ति से ज्ञात नहीं कर सकतीं और कोई बौद्धिक तर्क उसके अस्तित्व पर ठोस प्रमाण नहीं हो सकता क्योंकि बुद्धि की दौड़ और कोशिश केवल उस सीमा तक है कि इस जगत की कारीगरियों पर दृष्टि डालकर रचयिता की आवश्यकता महसूस करे किन्तु आवश्यकता का महसूस करना और बात है तथा आँखें देखे विश्वास का उस श्रेणी तक पहुँचना कि जिस खुदा की आवश्यकता स्वीकार की गई है वह वास्तव में मौज़द भी है, यह और बात है। चूँकि बुद्धि का उपाय अपूर्ण, अधूरा और संदिग्ध है इसलिए प्रत्येक दार्शनिक (फ़िलास्फ़र) मात्र बुद्धि के माध्यम से खुदा को नहीं पहचान सकता बल्कि अधिकतर ऐसे लोग जो मात्र बुद्धि के माध्यम से खुदा तआला का पता लगाना चाहते हैं। अन्ततः नास्तिक बन जाते हैं तथा पृथ्वी और आकाश की रचनाओं पर विचार करना उन्हें कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा सकता। वह खुदा के वलियों पर उपहास करते हैं तथा उन का तर्क यह है कि संसार में हज़ारों ऐसी वस्तुएँ पाई जाती हैं जिनके अस्तित्व का हम कोई लाभ नहीं देखते जिनमें हमारे बौद्धिक अनुसंधान से ऐसी रचना सिद्ध नहीं होती जो रचयिता को सिद्ध करे बल्कि मात्र व्यर्थ और निरर्थक तौर पर उन वस्तुओं का अस्तित्व पाया जाता है। खेद वे मूर्ख नहीं जानते कि ज्ञान के अभाव से वस्तु का अभाव अनिवार्य नहीं होता। इस प्रकार के लोग इस युग में कई लाख पाए जाते हैं जो स्वयं को प्रथम श्रेणी के बुद्धिमान और दार्शनिक समझते हैं और खुदा तआला के अस्तित्व के कट्टर इन्कारी हैं। अतः स्पष्ट है कि यदि कोई ज़बरदस्त बौद्धिक तर्क उनको मिलता तो वे खुदा तआला के अस्तित्व का इन्कार न करते और यदि महाप्रतापी स्रष्टा (खुदा) पर कोई विश्वसनीय बौद्धिक तर्क उन को दोषी करता तो वे बड़ी निर्लज्जता तथा उपहासपूर्वक खुदा तआला के अस्तित्व से इनकारी

न हो जाते। अतः कोई व्यक्ति दार्शनिकों की नौका (नाव) पर बैठकर सन्देहों के तूफ़ान से मुक्ति नहीं पा सकता बल्कि अवश्य डूबेगा तथा उसे शुद्ध तौहीद (एकेश्वरवाद) का शरबत प्राप्त नहीं होगा। अतः विचार करो कि यह विचार कितना असत्य और दुर्गन्धयुक्त है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम के बिना तौहीद (एकेश्वरवाद) प्राप्त हो सकती है? हे मूर्ख! जब तक ख़ुदा के अस्तित्व पर पूर्ण विश्वास न हो उसकी तौहीद पर क्योंकर विश्वास हो सके। अतः निश्चित समझो कि विश्वसनीय एकेश्वरवाद (तौहीद) मात्र नबी के द्वारा ही प्राप्त हो सकता है जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अरब नास्तिकों और अधर्मियों को हज़ारों आकाशीय निशान दिखा कर ख़ुदा तआला के अस्तित्व को स्वीकार करा दिया और अब तक आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा और पूर्ण अनुसरण करने वाले उन निशानों को नास्तिकों के सामने प्रस्तुत करते हैं। बात यही सच है कि जब तक जीवित ख़ुदा की जीवित शक्तियां मनुष्य नहीं देखता शैतान उस के हृदय में से नहीं निकलता और न सच्ची तौहीद (एकेश्वरवाद) उस के हृदय में प्रवेश करती है और न ही निश्चित तौर पर ख़ुदा की हस्ती (अस्तित्व) को स्वीकार कर सकता है तथा यह पवित्र और पूर्ण तौहीद केवल आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के माध्यम से प्राप्त होती है।"

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-22 पृष्ठ-121,122)

"हमारा स्वर्ग हमारा ख़ुदा है हमारे श्रेष्ठ आनन्द हमारे ख़ुदा में हैं क्योंकि हमने उसको देखा और प्रत्येक सुन्दरता उसमें पाई। यह दौलत लेने योग्य है यद्यपि प्राण देने से मिले और यह ला'ल (रत्न) ख़रीदने के योग्य है यद्यपि सम्पूर्ण अस्तित्व खोने से प्राप्त हो। हे वंचितो! उस झरने की ओर दौड़ो कि वह तुम्हें सैराब करेगा। यह जीवन का झरना है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और किस प्रकार इस खुशख़बरी को हृदयों में बिठाऊँ। किस डपली से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें और किस दवा से मैं इलाज करूँ ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुलें।"

(किशती नूह रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-19 पृष्ठ-21,22)

इस्लाम का ख़ुदा वही सच्चा ख़ुदा है जो प्रकृति के नियम का दर्पण तथा सृष्टि की पुस्तक से दिखाई दे रहा है। इस्लाम ने कोई नया ख़ुदा प्रस्तुत नहीं किया बल्कि वही ख़ुदा प्रस्तुत किया है जो मनुष्य के हृदय का प्रकाश, मनुष्य की अन्तरात्मा और पृथ्वी तथा आकाश प्रस्तुत कर रहे हैं।

(तब्लीग़-ए-इस्लाम, जिल्द-6 पृष्ठ-14 मजमुआ इश्तिहरात जिल्द-2 पृष्ठ-12, संस्करण द्वितीय)

अल्लाह ताआला हमें ख़ुदा तआला की सही पहचान की तौफीक़ अता फरमाए, आमीन।

☆ ☆ ☆



हर अहमदी को सदैव याद रखना चाहिए कि हर अहमदी के चेहरे की पीछे अहमदियत का चेहरा है
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा है
अतः हर अहमदी का दायित्व है कि इन चेहरों की रक्षा करे और जिनको अल्लाह तआला ने दीन की
सेवा का सामर्थ्य प्रदान किया है उनका अधिक कर्तव्य है कि इस दायित्व को निभाएँ तथा हज़रत
मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस उपदेश को सदैव सामने रखें कि हमारी बैअत का दावा करके
फिर हमें बदनाम न करें।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु
तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला के फ़ज़लों तथा उसके इनामों में से जो हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
की बैअत में आकर मिले, एक बहुत बड़ा फ़ज़ूल तथा पुरस्कार हमें जलसा सालाना के रूप में मिल रहा
है ताकि हम अपने रूहानी और शिष्टाचारी तथा ज्ञान सम्बंधी सुधार के लिए प्रयास कर सकें। अल्लाह
तआला की निकटता प्राप्त करने और तक्वा में बढ़ने के सामान कर सकें। एक दूसरे के अधिकारों का
निर्वाह करने के लिए अपने दिलों को साफ़ करें और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जलसे की
स्थापना के उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास कर सकें। आपस में द्वेष तथा दूरियों को सन्धि और निकटता
में बदलने का प्रयास करें। अपने आपको व्यर्थ की बातों से पाक करने की कोशिश करें। हज़रत मसीह
मौऊद अलैहिस्सलाम ने ये बातें जलसे के आयोजन के विषय में बयान फ़रमाई हैं। अतः हर व्यक्ति को
जो जलसे में शामिल हो रहा है, पुरुष है अथवा स्त्री इस बात को अपने सम्मुख रखना चाहिए कि क्या वह
ख़ुदा तआला की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए प्रयासरत है तथा इस नीयत से जलसे में शामिल हुआ है? तक्वा
में बढ़ने का प्रयास कर रहा है, उच्च आचरण को अभिव्यक्त करते हुए एक दूसरे के हक़ अदा करने का

प्रयास कर रहा है, अथवा इस सोच के साथ यहाँ आया है? अतः इसके लिए हमें कुछ प्रयत्न करने होंगे ताकि उन समस्त बातों की प्राप्ति सम्भव हो और अल्लाह तआला के फ़ज़ूलों को हम धारण करने वाले हों, और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जलसे पर आने वालों के लिए की गई दुआओं के भी अधिकारी बनें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं कदापि नहीं चाहता कि वर्तमान पीरज़ादों की तरह केवल प्रत्यक्ष शान दिखाने के लिए अपनी बैअत करने वालों को एकत्र करूँ बल्कि वह मूल बात जिसके लिए मैं प्रयत्न करता हूँ, अल्लाह के प्राणियों में सुधार है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः हमें इस बातों पर विचार करना चाहिए। कुछ दिन पहले रमज़ान समाप्त हुआ है जो एक आध्यात्मिक सुधार और उन्नति का महीना था जिसमें व्यक्तिगत इबादतें और रोज़े तथा अल्लाह की स्तुति का अवसर प्रत्येक मोमिन को मिला तथा एक अन्य तीन दिन का कैम्प है जिसमें ज्ञान सम्बंधी तथा दीन के ज्ञान के अवसरों के साथ इबादतों और ज़िक्र-ए-इलाही का वातावरण है यदि हम इससे लाभ न प्राप्त करें तो फिर और किस तरह उठाएँगे।

अतः एक अत्यंत भारी दायित्व हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम पर डाला है तथा अपने मानने वालों से बड़ी आशाएँ बाँधी हैं। इस वातावरण का वास्तविक लाभ तभी होगा जब दुनिया की मुहब्बत अल्लाह तआला तथा उसके रसूल की मुहब्बत की तुलना में ठंडी हो जाएगी। दुनिया में रहते हुए दुनिया की मुहब्बत को ख़ुदा और उसके रसूल की मुहब्बत की तुलना में द्वितीय स्थान देना यह बहुत बड़ी बात है और यही चीज़ है जो वास्तविक मोमिन बनाती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

ख़ुदा तआला ने जो इस जमाअत को बनाना चाहा है तो इसका उद्देश्य यही रखा है कि वह वास्तविक मअरिफ़त जो दुनिया से ओझल हो गई थी उसे दोबारा क़ायम करे। फिर आप एक अवसर पर हमें अपने तक्वा के स्तर को बुलन्द करने का सदुपदेश देते हुए फ़रमाते हैं कि ऐ वे तमाम लोगो जो अपने आपको मेरी जमाअत मानते हो आसमान पर तुम उस समय मेरी जमाअत समझे जाओगे जब सच मुच तक्वा की राहों पर क़दम मारोगे।

फिर एक स्थान पर अल्लाह तआला की महानता तथा प्रेम दिलों में पैदा करने की ओर ध्यान दिलाते हुए आप फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की महानता दिलों में बिठाओ तथा उसकी तौहीद का इक्रार न केवल ज़बानी बल्कि व्यवहारिक रूप में करो ता ख़ुदा भी व्यवहारिक रूप से अपना स्नेह और उपकार तुम पर प्रकट करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- किसी एक नेकी पर चलना तक्वा नहीं अपितु हर प्रकार की नेकियाँ बजालाना ख़ुदा तआला तथा उसके बन्दों के हर प्रकार के अधिकारों का निर्वाह करना वास्तविक तक्वा है।

कुछ लोग बाहर के जमाअती कामों में अच्छे हैं तो घरों में बीवी बच्चे उनसे तंग आए हुए हैं। कुछ लोग घरों के हक़ अदा कर रहे हैं तो अल्लाह तआला के हक़ और उसकी इबादत की ओर ध्यान नहीं है। कुछ प्रत्यक्षतः इबादत करने वाले हैं तो समाज के आपस के मामलों में एक दूसरे का हक़ मारने वाले हैं। अतः अल्लाह तआला के स्नेह और उपकार को प्राप्त करने के लिए हर एक दिशा और हर एक पहलू से अपनी क्रिया शील हालतों का सुधार करने की आवश्यकता है तथा ये जलसे के आयोजन इसी उद्देश्य के लिए किए गए हैं कि नेकियों की अदायगी की ओर ध्यान आकर्षित हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

याद रखो अल्लाह तआला के सच्चे बन्दे वही होते हैं जिनके विषय में उसने फ़रमाया है कि-
 اٰثَرًا لِّاٰثَرِهِمْ تَجَارَةٌ وَلَا يَبِيعُ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ
 अर्थात् जिन्हें न कोई व्यापार, न क्रय विक्रय अल्लाह की स्तुति से ग़ाफल रखती है। फ़रमाया कि जब दिल खुदा के साथ सच्चा सम्बंध जोड़ लेता है तो वह उससे अलग होता ही नहीं है। जैसे किसी का बच्चा बीमार हो तो चाहे वह कहीं जावे किसी काम में व्यस्त हो किन्तु उसका दिल और ध्यान उस बच्चे में रहेगा। इस प्रकार से जो लोग खुदा तआला से सच्चा सम्बंध और स्नेह पैदा करते हैं वे किसी अवस्था में भी खुदा तआला को नहीं भूलते। अतः यह वह अवस्था है जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हममें देखना चाहते हैं तथा इस अवस्था के पैदा करने की कोशिश के लिए हम यहाँ एकत्र हुए हैं। हममें से प्रत्येक को प्रयास करना चाहिए तथा खुदा तआला से दुआ भी करनी चाहिए कि हम इस अवस्था को प्राप्त करने वाले बन सकें।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- जलसे में आने वाले तथा ड्यूटियाँ देने वाले इन दिनों में ज़िक्र-ए-इलाही से अपनी ज़बानों को तर रखने का प्रयास करें तथा खुदा तआला की निकटता प्राप्त करने वाले बनें। इससे बड़ी और क्या बात हमारे लिए होगी कि अल्लाह तआला हमें याद रखे। अतः इसकी प्राप्ति के लिए हमें प्रयास करना चाहिए और तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशानुसार आसमान पर आपकी जमाअत में गिने जाएँगे। इन दिनों में हमें यह दुआ करनी चाहिए कि हम उन लोगों में न गिने जाएँ जिनसे खुदा तआला प्रसन्न नहीं बल्कि उन लोगों में शामिल हों जिनका वर्णन खुदा तआला फ़रमाता है, खुदा तआला से हम दृढ़ सम्बंध जोड़ने वाले हों, अपने दिलों के अंधेरो को मिटाने वाले हों। अतः जब हम अल्लाह तआला से सहायता मांगते हुए तथा दरूद व इस्तिग़फ़ार करते हुए ये दिन व्यतीत करेंगे, अपने दिनों को केवल अल्लाह तआला के लिए व्यतीत करेंगे तो हमारी इबादतों के स्तर भी बुलन्द होंगे और अल्लाह तआला से सम्बंध के कारण अल्लाह तआला के प्राणियों के हक़ अदा करने वाले भी हम बनेंगे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इन दिनों को आपस के द्वेष दूर करने का माध्यम भी बनाएँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जलसा सालाना को भी अल्लाह की निशानियों

में दाखिल फ़रमाया है जो लोग अल्लाह की निशानियों को हानि पहुंचाते हैं वे अल्लाह तआला के प्रकोप के नीचे आते हैं। अतः बड़े भय का अवसर है, जिनके मतभेद हैं उनको चाहिए कि तुरन्त एक दूसरे के लिए सन्धि का हाथ बढ़ाएँ तथा ऐसा वातावरण पैदा करें जहाँ अहंकार के खोलों में बन्द होने के बजाए और ईर्ष्या की आग में जलने के बजाए सलामती और सन्धि का सुन्दर वातावरण पैदा करें। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस उपदेश को सदैव अपने सामने रखना चाहिए कि मुसलमान वह है जिसके हाथ और ज़बान से किसी को कष्ट न पहुंचे। हमें समीक्षा करनी चाहिए कि यह उपदेश हमारी अवस्थाओं का चित्रण करता है। मुझे बड़े खेद के साथ यह भी कहना पड़ रहा है कि कुछ लोग जलसों पर आते हैं और तनिक तनिक सी बात पर पुराने द्वेषों तथा मतभेदों के कारण जलसों के दिनों में इस वातावरण में भी लड़ाई झगड़ा कर बैठते हैं। कई बार पुलिस को भी बुलाना पड़ता है, क्या यह एक मोमिन की शान है? क्या हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने वालों के ऐसे कर्म हैं? निःसन्देह नहीं। ऐसे लोगों को जमाअत के निज़ाम से यदि बाहर निकालें अथवा न निकालें अपने कर्म के कारण अल्लाह तआला की दृष्टि में वे जमाअत से बाहर निकल जाते हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद के अनुसार वे आसमान पर आपकी जमाअत में शामिल नहीं हैं। इसी प्रकार ओहदेदार हैं और जलसे की ड्यूटी देने वाले हैं वे भी इन दिनों में विशेष ध्यान रखें कि उनके शिष्टाचार के स्तर अत्यधिक उच्च होने चाहिए। ओहदेदारों की यह विशेष ज़िम्मेदारी है कि उनमें सहन शक्ति अधिक होनी चाहिए। अतः ओहदेदार अपने आपको हर हाल में सेवक समझें तथा जमाअत के लोगों तथा जलसे में शामिल होने वाले ओहदेदारों को जमाअत के निज़ाम का प्रतिनिधि समझें तो तभी खिंचाव तथा लड़ाईयों की स्थिति में सुधार आ सकता है, आपस के मतभेद दूर हो सकते हैं। सदैव याद रखना चाहिए कि असल चीज़ ओहदा नहीं बल्कि असल चीज़ अपनी बैअत के हक़ को अदा करना है। चाहे वह ओहदेदार है या जमाअत का एक व्यक्ति है उसे इस हक़ को अदा करने का प्रयास करना चाहिए और इस हक़ की अदायगी के बारे में नसीहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

हे मेरी जमाअत! खुदा तआला आप लोगों के साथ है और क़ादिर-ए-करीम आप लोगों को अन्तिम यात्रा के लिए ऐसा तय्यार करे जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सहाबी तय्यार किए गए थे। धिक्कार वाला है वह जीवन जो केवल संसार के लिए है और दुर्भाग्य शाली है वह जिसकी समस्त चिंताएँ तथा गतिविधियाँ दुनिया के लिए हैं। ऐसा इंसान यदि मेरी जमाअत में है तो वह बेकार ही अपने आपको मेरी जमाअत में दाखिल करता है क्योंकि वह उस शुष्क टहनी की भांति है जो फल नहीं लाएगी। फिर फ़रमाया, हे नेक लोगो, तुम ज़ोर के साथ इस शिक्षा में दाखिल हो जो

तुम्हारी मुक्ति के लिए मुझे दी गई है। तुम खुदा को एक अकेला समझो और उसके साथ किसी चीज़ को शामिल न करो, न आसमान में न ज़मीन में। खुदा साधन के उपयोग से तुम्हें मना नहीं करता किन्तु जो व्यक्ति खुदा को छोड़ कर साधन पर ही भरोसा करता है वह मुशरिक है। कदीम से खुदा कहता चला आया है कि पाक दिल बनने के अतिरिक्त मुक्ति नहीं, सो तुम पाक दिल बन जाओ तथा संकीर्ण मनोवृत्तियों और क्रोधों से अलग हो जाओ। खुदा तआला के प्रति दायित्वों को दिली खौफ़ से बजा लाओ कि तुम इनके विषय में पूछे जाओगे। नमाज़ों में बहुत दुआ करो कि ता खुदा तुम्हें अपनी ओर खींचे और तुम्हारे दिलों को साफ़ करे क्योंकि इंसान कमज़ोर है। प्रत्येक बदी जो दूर होती है वह खुदा तआला की शक्ति से दूर होती है और जब इंसान खुदा से शक्ति न पावे, किसी बदी के दूर करने पर समर्थ नहीं हो सकता। इस्लाम केवल यह नहीं है कि रस्म के रूप में अपने आपको कलिमा पढ़ने वाला कहलाओ बल्कि इस्लाम की वास्तविकता यह है कि तुम्हारी आत्माएँ खुदा तआला की चौखट पर गिर जाएँ और खुदा तआला तथा उसके आदेश हर प्रकार से तुम्हारी दुनिया पर तुम्हारे लिए प्राथमिक हो जाएँ।

अतः यह वह स्तर है जिस पर हममें से प्रत्येक को पूरा उतरने का प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक अहमदी को सदैव याद रखना चाहिए कि हर अहमदी के चेहरे के पीछे अहमदियत का चेहरा है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का चेहरा है, इस्लाम का चेहरा है। अतः प्रत्येक अहमदी का दायित्व है कि इन चेहरों की रक्षा करे और जिनको अल्लाह तआला ने सेवा का अवसर दिया है उनका अधिक दायित्व है कि इस कर्तव्य को निभाएँ और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इरशाद को सदैव सम्मुख रखें कि हमारी बैअत का दावा करके फिर हमें बदनाम न करें। अतः इस इरशाद को सदैव अपने सामने रखना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक दुआ इस समय मैं पेश करता हूँ जिससे आपकी चिंता प्रकट होती है जो आपके दिल में अपने मानने वालों के लिए है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैं दुआ करता हूँ और जब तक मुझ में जीवन की शक्ति है किए जाऊँगा और दुआ यही है कि खुदा तआला मेरी इस जमाअत के दिलों को पाक करे और अपनी रहमत का हाथ लम्बा करके उनके दिल अपनी ओर फेर दे और समस्त शरारतें और द्वेष उनके दिलों से उठा दे तथा आपस का सच्चा प्रेम अता कर दे और मैं विश्वास रखता हूँ कि यह दुआ किसी समय क़बूल होगी और खुदा मेरी दुआओं को नष्ट नहीं करेगा। अल्लाह तआला से हमें यह दुआ करनी चाहिए कि यह दुआ हमारे हक़ में पूरी हो, हमारी पीढ़ियों के हक़ में पूरी हो तथा क़यामत तक हमारी नस्लें भी इस दुआ का लाभ उठाती चली जाएँ।



इस्लामी राजकीय प्रबंधन

लेखक- फजल नासिर, मुरब्बी सिलसिला, नूरुल इस्लाम क़ादियान

जब हम विभिन्न प्रकार की राजनीतिक प्रणालियों को ध्यान में रखकर इस्लाम का अध्ययन करते हैं तो पता चलता है कि इस्लाम ने किसी भी राजनीतिक प्रणाली की खुली आलोचना नहीं की और न ही यह एक वैश्विक धर्म के अनुकूल है कि वह समस्त विश्व के लिए एक ही प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था को प्रस्तुत करें। संसार में कितनी विभिन्नताएं हैं। अलग-अलग समाज की अपनी धारणाएं हैं इसलिए इस्लाम ने इसे लोगों पर ही छोड़ दिया है बशर्ते कि वह व्यवस्था एक अच्छी समाजिक विरासत के तौर पर उस देश के लोगों को पसंद भी हो। दरअसल कोई भी राजनीतिक व्यवस्था अपने आप में अच्छी या बुरी नहीं बल्कि यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसे चलाने वाले लोग कैसे हैं अतः एक ईमानदार और योग्य शासक जो अपनी प्रजा का खयाल रखने वाला हो किसी लोकतांत्रिक देश के चुने हुए भ्रष्ट प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्रपति से बेहतर है। हां यह सत्य है कि इस्लाम ने लोकतंत्र को दूसरी अन्य प्रणालियों जैसे कि सामंतशाही राजतंत्र इत्यादि पर प्राथमिकता दी है एवं उसकी प्रशंसा की है। पवित्र कुरआन में लोकतंत्र के साथ-साथ अन्य प्रणालियों का भी वर्णन मिलता है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا ۚ قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ۚ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ۚ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٨﴾
(सूरत बकर: 2:248)

अर्थात उनके नबी ने उनसे कहा निसंदेह अल्लाह ने तुम्हारे लिए तालूत को राजा बनाया है। उन्होंने कहा वह हम पर राज कैसे कर सकता है? हम उसकी तुलना में सत्ता के अधिक हकदार हैं। उसके पास तो प्रचुर मात्रा में धन भी नहीं! नबी ने कहा बेशक अल्लाह ने उसे तुम्हारे लिए चुन लिया है और उसके ज्ञान तथा शारीरिक क्षमताओं में वृद्धि की है। अल्लाह जिसे चाहता है सत्ता देता है अल्लाह बहुत बड़ा और बहुत जाने वाला है।

इस जगह राजतंत्र की एक प्रणाली के रूप में आलोचना नहीं की गई है। राजा अच्छे अथवा बुरे हो सकते हैं जैसा कि लोकतांत्रिक ढंग से चुने हुए प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति। हां यह ज़रूर सच

है कि जो साम्राज्य किसी को अधीन करके स्थापित अथवा विस्तृत किया जाए उसे अच्छा नहीं समझा जाता जैसा कि पवित्र कुरान में वर्णन किया गया है सबा की रानी अपने लोगों से कहती है कि-

إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا وَجَعَلُوا أَعِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۚ وَكَذَلِكَ يَفْعَلُونَ

(सूरत अन्नमल- 27:35)

अर्थात् जब ताकतवर सम्राट किसी देश पर हमला करते हैं तो उसे बर्बाद कर देते हैं और उसके प्रमुख लोगों को जलील कर देते हैं। यही उनकी शैली हुआ करती है।

लोकतंत्र : हज़रत खलीफ़तुल मसीह चतुर्थ लोकतंत्र के विषय पर प्रकाश डालते हुए वर्णन करते हैं कि

लोकतंत्र का सिद्धांत अपने यूनानी मूल के बावजूद इब्राहीम लिंकन के द्वारा की गई निम्नलिखित संक्षिप्त परिभाषा पर आधारित है।

"Government of the people for the people by the people"

अर्थात् लोगों की सरकार लोगों के द्वारा लोगों के लिए।

वैसे तो लोकतंत्र की यह व्याख्या काफी लुभावनी मालूम होती है परंतु शायद ही यह कभी किसी लोकतंत्र देश में लागू भी हुई होगी। इसका अंतिम भाग लोगों के द्वारा पूर्ण रूप से अस्पष्ट तथा खतरों से भरा हुआ है। किसी भी सरकार का लोगों के द्वारा होना पूर्ण विश्वास से कैसे कहा जा सकता है? जब सरकार बहुमत की हो तो लोगों से तात्पर्य बहुमत है न कि अल्पमत।

लोकतांत्रिक प्रणाली में महत्वपूर्ण फैसले अक्सर बहुमत के आधार पर कर लिए जाते हैं। लेकिन जब तथ्यों तथा आंकड़ों का गहराई में जाकर विश्लेषण किया जाए तो मालूम होगा कि यह तो वास्तव में अल्पमत का फैसला था जो लोकतांत्रिक ढंग से पास किया गया तथा बहुजन पर थोपा गया। इसकी एक संभावित सूरत यह भी हो सकती है कि सत्तारूढ़ पार्टी कुछ चुनावी क्षेत्रों में अन्य पार्टियों की तुलना में मामूली बहुमत के साथ जीत हासिल करके सत्ता में आ जाए। इस पर यदि चुनाव के दिन कम वोट पड़े तो यह और भी अधिक स्पष्ट हो जाता है कि क्या वास्तव में रूलिंग पार्टी को बहुमत प्राप्त है? फिर यदि कोई पार्टी चुनाव में बहुमत हासिल कर भी लेती है तब भी उसके शासनकाल में कुछ ऐसी घटनाएं हो सकती हैं जो उस सरकार पर लोगों के विश्वास को कम कर दे। लोगों की राय ऐसे समय में बहुत तेज़ी से बदल सकती हैं।

जिसके कारण सत्तारूढ़ सरकार बहुजन की वास्तविक प्रतिनिधि नहीं रहती। यदि सरकार अपने मतदाताओं में लोकप्रिय भी रहे तब भी यह असंभव नहीं की महत्वपूर्ण निर्णयों के समय सत्तारूढ़ दल के सदस्यों की पर्याप्त संख्या दिल से बहुमत से सहमत न हो और दल से वफादारी के चलते पक्ष में वोट किया हो। यदि मतभेद सत्तारूढ़ दल का विपक्षी दलों पर शक्ति प्रदर्शन को लेकर है तो स्वाभाविक रूप से कथित बहुमत का निर्णय वास्तव में अल्पमत का निर्णय होगा जो लोगों पर थोपा गया।

यह भी याद रखने योग्य है कि जहां तक 'लोगों के द्वारा सरकार' का संबंध है, इस संदर्भ में सोशलिस्ट राज्यों को लोकतांत्रिक राज्यों से अलग करने वाली सीमा बहुत सूक्ष्म है और कभी-कभी तो बिल्कुल ही लुप्त हो जाती है। ऐसे हालात में विश्व की उन सोशलिस्ट सरकारों को जो चुनाव के द्वारा सत्ता में आई कोई कैसे कह सकता है कि वह लोगों के द्वारा नहीं चुनी गई। हां यह सत्य है कि Totalitarian राज्यों में मतदाताओं को अपनी प्रत्याशी चुनने का सीमित अधिकार मिलता है और उनके पास दूसरा कोई विकल्प नहीं होता। लेकिन एक लोकतांत्रिक देश में भी तो इस प्रकार की या अन्य जोर-जबर्दस्ती की युक्तियां उपयोग की जा सकती हैं। वास्तव में विश्व के अधिकतर क्षेत्रों में लोकतंत्र की स्वतंत्रता नहीं मिल पाती और ऐसा कम ही होता है कि चुनाव को पूर्ण रूप से लोगों के द्वारा कह सकें। चुनाव में हेरा फेरी 'Horse trading' पुलिस या दूसरे भ्रष्ट तरीकों से डरा धमका कर लोकतंत्र की आत्मा को इतना कमजोर कर दिया जाता है कि अंत में लोकतंत्र का नाम ही शेष रह जाता है।

(Islam response to contemporary issue 224 to 226)

इस्लाम का लोकतांत्रिक सिद्धांत जैसा कि आरंभ में बताया गया है कि इस्लाम वैश्विक धर्म होने के नाते किसी भी राजनीतिक व्यवस्था की खुली आलोचना नहीं करता और उसे लोगों की पसंद पर छोड़ता है लेकिन इसके साथ ही इस्लाम में लोकतंत्र की प्रशंसा भी की है जैसा कि पवित्र कुरान में वर्णन किया गया है-

وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ

(अश्शूरा 42:39)

अर्थात वे अपने मामले आपसी मशवरे से तय करते हैं। परंतु पश्चिमी शैली के लोकतंत्र से इस्लाम का लोकतंत्र कुछ भिन्न है। इस्लाम केवल सिद्धांतों पर बात करता है एवं अन्य शेष बातों को लोगों की समझ बूझ पर छोड़ दिया है।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا ۖ وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ ۚ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٥٩﴾

(सूरह निसाअ 4:59)

अर्थात अल्लाह तुम्हें हुकुम देता है कि तुम अमानत उसके वास्तविक हकदार के सुपुर्द करो और जब तुम लोगों पर राज करो या सरकार चलाओ तो पूरी निष्ठा और ईमानदारी से सरकार चलाओ।

इस्लाम के अनुसार मतदाताओं को उसका मताधिकार पूर्णता एवं बिना किसी शर्त के हासिल है और मतदाता जब तक कि कोई रोक न हो अपने मताधिकार का इस्तेमाल करने के लिए बाध्य हैं। यह केवल एक अधिकार ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय अमानत भी है जो चुनाव के समय प्रत्याशी की योग्यता और ईमानदारी को ध्यान में रखकर उसे सौंपा जाना चाहिए। मतदाता ईश्वर के समक्ष उत्तरदाई होगा कि क्या उसने वास्तव में वह अमानत जो मत के रूप में उसके पास थी उसके वास्तविक हकदार को अदा की? पश्चिमी शैली के लोकतंत्र में तो मतदाता किसी भी प्रत्याशी को चाहे वे कितनी ही भ्रष्ट और अयोग्य क्यों न हो वोट दे सकता है या बैलेट बॉक्स की जगह कूड़ेदान में अपना वोट फेंककर भी अपना वोट बर्बाद कर सकता है परंतु इस्लामिक लोकतंत्र में इसकी इजाजत नहीं।

इस्लामिक लोकतंत्र की एक विशेषता यह भी है कि इसमें पश्चिमी शैली के लोकतंत्र की तरह party politics के लिए कोई स्थान नहीं और सरकार पूरी निष्ठा के साथ चलाने के लिए बाध्य हैं। उन्हें प्रत्येक निर्णय के समय इंसान से काम लेना चाहिए। पार्टी के हित तथा राजनीतिक महत्व निर्णय को प्रभावित करने वाले न हों, जो आगे चलकर नाइंसाफी का कारण बनते हैं और फिर देश में अराजकता का माहौल पैदा होता है।


समाज के निर्माण में धर्म व राज्य का अपना अपना किरदार है। जब तक ये दोनों अपने निर्धारित क्षेत्र में कार्यरत रहेंगे और आपस में टकराएंगे नहीं तब तक समाज का इंजन सुचारू रूप में काम करता रहेगा तथा शांति बनी रहेगी। स्वाभाविक है कि कभी-कभी यह एक दूसरे पर overlap भी करते हैं लेकिन यह आपसी सहयोग के लिए होता है किसी टकराव का नतीजा नहीं होता।

सरकार का धर्म के अधीन होना आवश्यक नहीं। इस्लाम धर्म का अनुयायी एक ही समय में राज्य का भी वफादार हो सकता है वह अपने धर्म का वफादार बनकर उसके आदेशों का पालन भी कर सकता है। इसके लिए किसी कानून विशेष की आवश्यकता नहीं है। इस्लाम के अनुसार पूर्ण न्याय

राज्य का मुख्य आधार है तथा सरकारों को न्याय ही को सामने रखकर अपने समस्त कार्य करने चाहिए। किसी मुस्लिम बाहुल्य देश में भी यह संभव नहीं के शरीयत पर आधारित एक सामान्य दंड संहिता लागू की जाए क्योंकि सबसे पहले तो इस्लाम के भीतर ही बहुत मतभेद हैं। इस सूरत में पता नहीं चल सकेगा के शरीयत के द्वारा किसी अपराध के लिए निर्धारित दंड से अल्लाह तआला का वास्तविक अभिप्राय क्या है? इसी तरह यह कानून मुसलमानों पर तो लागू हो सकता है परंतु हर मुसलमान पर थोपा नहीं जा सकता और यदि समस्त नागरिकों के लिए भी यही कानून लागू किया जाए तो इंसाफ तो यह कहता है कि यह हर मुस्लिम बाहुल्य देश में रहने वाले मुसलमानों पर भी किसी अन्य धर्म के द्वारा निर्धारित कानून लागू करने की छूट हो जिसके परिणाम स्वरूप बहुत सी कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं।

वास्तव में धर्म का काम सरकारों को नैतिकता का पाठ पढ़ाना है और जिन बातों से इस्लाम रोकता है उन अपराधों के लिए दंड का प्रावधान है वे ऐसी बातें हैं जिन को लोगों की मानसिकता भी बुरा मानती हैं जैसे की हत्या, चोरी, अराजकता, बगावत इत्यादि और प्रत्येक राज्य में इन अपराधों के लिए सजा का प्रावधान है बावजूद इसके कि कहीं ये दंड अधिक कठोर हैं तो कहीं कम।





JANATA
STONECRUSHING INDUSTRIES

Mfg. :
Hard Granite Stone, Chips, Boulder etc.

LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE

At - Tisalpur, P.O. - Rahanja,
Distt. - Bhadrak - 756 111

☎ : 06784-230727
Mob. : 9437060325

Mob. 9934765081

Guddu Book Store

All type of books N.C.E.R.T, C.B.S.E &
C.C.E are available here. Also available
books for childrens & supply retail and
wholesale for schools

**Urdu Chowk, Tarapur, Munger,
Bihar 813221**

हज़रत खलीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिंहिल

अज़ीज़ की जीवनी पर आधारित

ईमानवर्धक वृत्तांत

अनुवादक – सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद M.A.

अल्लाह तआला जिनका शुमार अपने प्यारे बन्दों में करता है और जिन्हें अपने विशेष कार्यों के लिए चुनता है उन लोगों के साथ उसका व्यवहार भी दूसरों से अलग और मुहब्बत भरा होता है जो जमाअत के लोगों के लिए मार्गदर्शक होता है।

सदियों से लोग जिसके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे और जिस को स्थापित करने के लिए संसार के समस्त मुसलमानों ने एड़ी चोटी का जोर लगाया परंतु फिर भी उसमें सफल न हो सके वह नेमत ख़िलाफ़त की नेमत है जो हमारे प्यारे रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण रूप से पैरवी करने के नतीजा में हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी को मसीह मौऊद-व-महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम के रूप में मिली और आप के पश्चात अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त का पवित्र निज़ाम जमाअत अहमदिया को प्रदान किया जिसकी छाया के अधीन जमाअत अहमदिया जहां इस्लाम की पवित्र शिक्षाओं का समस्त संसार में प्रचार व प्रसार कर रही है वही साथ ही साथ आपके पवित्र वजूद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिंहिल अज़ीज़ के कुछ दिलचस्प वृत्तांत विनीत आपके सामने रखता है।

श्रीमान बिशारत नवीद साहिब मुरब्बी सिलसिला मॉरीशस वर्णन करते हैं मॉरीशस में हुज़ूर



**INDIA MOVES
ON
EXIDE**

M.S.AUTO SERVICE
2-423/4 Bharath Building
Railway Station Road Kacheguda,
Hyderabad.500027(T.s)

Cell :9440996396,9866531100

SWARAJ



सलाम मोटर्स

अधिकृत विक्रेता
स्वराज ट्रैक्टर: सेल्स व सर्विस ब्यावर

मो. यूसुफ काठात अताउल्लाह खान
9460458032 8696714040

शोरूम : मसूदा रोड, चुंगी नाका के पास, ब्यावर



अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अजीज के आने के प्रथम दिन जब आप नमाज़ जुहर और असर पढ़ने के लिए अपने निवास स्थान से मस्जिद जाने के लिए बाहर आए और काफिला जाने के लिए तैयार हो गया तो ड्यूटी पर मौजूद खुद्दाम ने इलेक्ट्रॉनिक मेन गेट को रिमोट की सहायता से खोलना चाहा लेकिन हर प्रकार के प्रयास करने के बाद भी गेट नहीं खुला अंततः खुद्दाम गेट को तोड़ने की कोशिश करने लगे लेकिन उसमें भी असफल रहे, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अजीज गाड़ी से बाहर पधारे और फ़रमाया रिमोट मुझे दें और जैसे ही आपने रिमोट का बटन दबाया गेट खुल गया, इस अवसर पर उपस्थित एक हिंदू पुलिस स्कॉर्ड जो कि यह सारा वृत्तांत अपनी आंखों से देख रहा था सहसा बोल उठा की चमत्कारों के बारे में सुना तो था परंतु आज अपनी आंखों के सामने पहली बार लाइव देखा है।

अब विनीत जिस वृत्तांत का वर्णन आपके सामने करना चाहता है यह हमारे प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अजीज का खिलाफ़त से पहले का वृत्तांत है जिसमें हमारे प्यारे हुज़ूर अनवर का अल्लाह तआला पर पूर्ण विश्वास को दर्शाता है।

इस वृत्तांत का वर्णन करते हुए आपकी पत्नी सय्यदा अम्तुल सबूह बेगम साहिबा फ़रमाती हैं।

जब हम नए-नए टमाले (अफ्रीका) गए अभी अधिक समय नहीं हुआ था और उन दिनों

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE

RSB Traders & whole seller



**Specialist in
Teddy Bear
Ladies &
Kids items,
All Types
of Bags &
Garments items**

Branch: Aroti Tola Po muluk
Bolpur-Birbhum
Head office: Q84 Akra Road
Po.Bartala, Kolkata-18

Mob: 9647960851
9082768330

Fawad Anas Ahmed
GOLDEN GROUP REAL ESTATE



दुआओं का आवेदक

DISTT. YADGIR - 585 201
KARNATAKA
Ph. : 9480172891

अस्पतालों में डॉक्टरों की हड़ताल थी केवल 9:00 से 5:00 बजे तक डॉक्टर आते थे इसके अतिरिक्त बाकी समय में और शनिवार, रविवार कोई मेडिकल स्टाफ उपस्थित नहीं होता था।

प्रिय वकास साहिब अभी सिर्फ 2 दिन के थे कि उन्हें भयानक दस्त हो गए, नया स्थान, अस्पताल की खराब व्यवस्था, डॉक्टरों की हड़ताल, मानो अजीब परेशानी थी, इतने छोटे बच्चे का कष्ट भी देखा नहीं जाता था। प्रिय फ़राह भी उस समय छोटी ही थी उसके लिए मैं पाकिस्तान से एक दवाई लाई हुई थी जो काफी स्ट्रॉंग होती है जिसे डॉक्टर इतने छोटे बच्चे के लिए किसी भी अवस्था में रिकमेंड नहीं करते। परंतु उस समय बहुत परेशान और चिंतित थे, हुजूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अजीज़ ने खुदा ताआला पर पूर्ण विश्वास और दुआ करते हुए अपने दाएं हाथ की एक उंगली डुबोकर प्रिय वकास को जो उस समय दस्त से निढाल था और दूध बिल्कुल नहीं पी रहा था, यह कहकर दो बार दवाई चटाई कि अल्लाह तआला की इच्छा क्या है यह तो हम नहीं जानते परंतु यह अफसोस तो नहीं होगा कि इलाज नहीं किया। चंद मिनट में तबीयत ठीक हो गई और अल्लाह तआला ने अद्भुत रूप में तंदुरुस्ती प्रदान की।

तीसरा वृत्तांत जिसका विनीत इस अवसर पर वर्णन करना चाहता है वह भी आपके खलीफा बनने से पहले का है, जो वक्त के खलीफा से मुहब्बत को दर्शाता है। वह वृत्तांत यह है कि आपकी पत्नी सय्यदा अम्तुल सबूह बेग़म साहिबा फ़रमाती हैं कि- हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह से आप को अत्यधिक मुहब्बत थी और दिल की गहराइयों से आप उन का सम्मान करते थे। एक बार आप खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह से फोन पर बात कर रहे थे तो मैंने देखा कि आप बात करते हुए सम्मानपूर्वक झुके जा रहे हैं। बाद में किसी ने पूछा कि किसका फोन था? तो आप ने उतर दिया कि हज़रत खलीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह का फोन था।

प्यारे भाइयो! हमें इस वृत्तांत से मालूम होता है कि हुजूर को अपने प्यारे खलीफा से कितना प्रेम था और आप उनका इतना सम्मान करते थे कि उनकी अनुपस्थिति में भी अदब और सम्मान से झुके जा रहे थे। अतः इस घटना से हमें यह सीखना चाहिए कि हमें अपने खलीफ़ा से कितना प्यार करना चाहिए और उनका दिल से सम्मान करना चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस बात का सामर्थ्य प्रदान करे कि हम भी ऐसे प्यार और मुहब्बत का इज़हार अपने इमाम से करने वाले बनें। आमीन



शेष....

सिलसिला अहमदिया (अर्थात अहमदियत का परिचय)

(लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब M.A.)

(भाग-15)

अनुवादक - इब्नुल मेहदी लईक M.A.

तीन बड़ी क्रौमों के बारे में उसूली भविष्यवाणियां

.....परन्तु इसके अतिरिक्त कि मसीही लोग इस से लाभ प्राप्त करते उन्होंने आसमान सिर पर उठा लिया और शोर करना आरंभ किया कि भविष्यवाणी ग़लत निकली क्योंकि आथम अवधि के अंदर नहीं मरा। इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विज्ञापन पर विज्ञापन प्रकाशित किया कि यह भविष्यवाणी कदापि नहीं थी अपितु शर्त के साथ थी और आथम ने अपनी अवस्था से सिद्ध कर दिया है कि उसने भविष्यवाणी की धाक से भयभीत हो कर अपनी पूर्व अवस्था से वापसी की है और आप ने लिखा कि यदि किसी को संदेह हो कि आथम ने वापसी नहीं की तो इसका सरल उपाय यह है कि आथम साहिब खुदा की क़सम खा जाएँ कि अवधि के समय मेरे दिल पर इस्लाम की धाक नहीं हुई और इस्लाम और मसीहियत के बारे में मेरे दिल की वही अवस्था रही है जो पहले थी तो मैं आथम साहिब को चार हज़ार रुपया पुरस्कार दूंगा और अपने आप को झूठा समझ लूंगा और आप ने ललकारते हुए लिखा कि यदि आथम साहिब ने ऐसी क़सम खा ली तो खुदा उन्हें एक वर्ष के भीतर अवश्य मार देगा और यह हलाकत निस्संदेह और अटल है जिस में कोई कमी नहीं होगी। परन्तु बावजूद बार बार ध्यान दिलाने के आथम साहिब इस क़सम के लिए तैयार न हुए। (देखो अनवारुल इस्लाम, रूहानी खज़ायन जिल्द 9 पृष्ठ 6)

तीसरी भविष्यवाणी पंडित लेखराम के बारे में थी जो आर्या क्रौम के एक बहुत बड़े लीडर थे।

NASIR MAHMOOD Ph. : 9330538771
7686979536

**MANUFACTURER
and
WHOLE SELLER**

Leather Wallats, Jackets, Ladies Bag,
Port Folio Bag, Key Chain, Belts etc.



70D Tiljala Road, Kolkata - 700046
e-mail : nasirmahmood.125@gmail.com

**LOVE FOR ALL
HATRED FOR NONE**

Cell
9423805546 / 9960071753
9420399786 / 2363271443

Prop.
Hammed Khan Beejali



Creative Computers

Durwankur, Appt. 05, Old, Shiroda Naka,
Tal. Sawantwadi, Distt. Sindhudurg, Maharashtra - 416510

पंडित लेखराम इस्लाम के बहुत बड़े दुश्मन थे और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विरुद्ध अत्यंत तेज़ ज़बानी से काम लिया करते थे और हज़रत मसीह मौऊद से निशान की मांग करते रहते थे। अंततः हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लेखराम साहिब की इच्छा अनुसार ख़ुदा से दुआ की कि उनके बारे में कोई ऐसा निशान दिखाया जाए जिस से इस्लाम की सच्चाई प्रकट हो और झूठा पक्ष अपनी सज़ा को पहुंचे इस पर 20 फ़रवरी 1893 ई० को आप ने ख़ुदा से ख़बर प्राप्त कर यह घोषणा की कि छः वर्ष की अवधि तक यह व्यक्ति अपनी बद जुबानियों की सज़ा में घोर आज़ाब में मुब्तला हो जाएगा। और आपने ललकारते हुए लिखा कि यदि इस व्यक्ति पर छः वर्ष की अवधि में कोई अज़ाब नाज़िल न हुआ जो समय के कष्टों से निराला और विलक्षण तथा अपने भीतर ख़ुदा का भय रखता हो तो समझो कि मैं ख़ुदा की ओर से नहीं। और पंडित लेखराम के बारे में ख़ुदा ने आप को यह शेर भी इल्हाम किया कि-

"अला ए दुश्मन नादान व बेराह

बतरस अज़ तेगे बुराने मुहम्मद"

अर्थात हे मुख़ और मार्ग से भटके हुए दुश्मन! तू इतना शेखी से काम न ले और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तेज़ तलवार से डर। (देखो विज्ञापन दिनांक 20 फ़रवरी 1893 ई० मजमुआ इश्तेहारात जिल्द प्रथम पृष्ठ 304 नवीन संस्करण)

अर्थात हे मुख़ और मार्ग से भटके हुए दुश्मन! तू इतना शेखी से काम न ले और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तेज़ तलवार से डर। (देखो विज्ञापन दिनांक 20 फ़रवरी 1893 ई० मजमुआ इश्तेहारात जिल्द प्रथम पृष्ठ 304 नवीन संस्करण)

इसके बाद आप ने इस बारे में और अधिक दुआ की तो आप पर प्रकट किया गया कि लेखराम की मृत्यु ईद के दूसरे दिन होगी। और आप को एक स्वप्न में यह भी बताया गया कि एक वैभवशाली बुरी शक्ल वाला फ़रिश्ता जिसकी आँखों से खून टपकता था पंडित लेखराम की हलाकत के लिए निर्धारित किया गया है। इसके मुकाबले में पंडित लेखराम ने भी यह घोषणा की कि मिर्ज़ा साहिब झूठे हैं और तीन साल की अवधि में तबाह और बर्बाद हो जाएंगे।

अतः यह आध्यात्मिक मुकाबला बड़े सुसज्जित रूप से और प्रताप के साथ आयोजित हुआ और दुनिया की नज़रें इस्लाम और आर्य धर्म के उन प्रसिद्ध लीडरों पर जम गईं और इस प्रतीक्षा में लग गईं कि ग़ैब के पर्दे से क्या प्रकट होता है। अंततः पंडित लेखराम की तीन साल की अवधि तो यों ही गुज़र गई और कुछ नहीं हुआ लेकिन जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बताई हुई अवधि का पांचवा वर्ष आया तो ईद के दूसरे दिन ही पंडित लेखराम साहिब एक आज्ञात व्यक्ति की छुरी का निशाना बन कर इस

फर्मूदात - हज़रत मुस्लेह मौऊद

(अनुवादक- सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद मुरब्बी सिलसिला, एम ए)

नमाज़ का महत्व

इस्लाम का पहला रुकन नमाज़ है। कोई मुसलमान नहीं जो इस आदेश से अलग हो जिस समय से बच्चे को होश आती है ठीक 7 बरस की आयु से इस फ़र्ज़ की अदायगी की ताकीद शुरू होती है और माता-पिता को आदेश है कि 7 वर्ष की आयु से बच्चे को ताकीद करें। 10 वर्ष की आयु में तो फिर बहुत ताकीद है। किशोरावस्था के पश्चात बीमारी, सेहत, यात्रा, घर में रहने की व्यवस्था में अर्थात् हर अवस्था में अनिवार्य है और कोई इस आदेश से पृथक् नहीं है।

नमाज़ तो रुकन-ए-इस्लाम है। जो नमाज़ नहीं पढ़ता वह खुदा के निकट मुसलमान नहीं। सिनेमा अपने ज्ञात में ना जाएज़ नहीं। उसमें नाजाएज़ बात हो तो नाजाएज़ है। परन्तु जो दीन की खिदमत नहीं करता और सिनेमा देखता है वह बुरा करता है।

नमाज़ की पाबंदी

प्रथम नमाज़ है उसकी पाबंदी अत्यधिक आवश्यक है, सामान्यतः महिलाओं की यह अवस्था होती है कि छोटी आयु में कहती हैं कि अभी बचपन है, किशोरावस्था में नमाज़ पढ़ेंगे, जब किशोर होती हैं तो बच्चों के बहाने बनाती हैं और जब बूढ़ी हो जाती हैं तो कहती हैं अब तो चला नहीं जाता नमाज़ क्या पढ़ें। इस तरह उनकी संपूर्ण आयु इसी प्रकार व्यतीत हो जाती है....

नमाज़ कोई कसरत नहीं, बल्कि खुदा तआला की इबादत है इसलिए इसे समझकर और अच्छी तरह मन लगाकर पढ़ना चाहिए और कोई नमाज़ सिवाए उन दिनों के जिनमें न पढ़ने की आज्ञा दी गई है, नहीं छोड़नी चाहिए। क्योंकि नमाज़ ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि यदि वर्ष में एक बार भी जानबूझकर न पढ़ी जाए तो व्यक्ति मुसलमान नहीं रहता। अतः जब तक प्रत्येक मुसलमान पुरुष और महिलाएं पांचों समय लगातार नमाज़ नहीं पढ़ते वे मुसलमान नहीं हो सकते।

प्रथम नमाज़ है जिसको पढ़ना अत्यधिक आवश्यक है परन्तु इसमें अत्यधिक सुस्ती की जाती है और विशेषकर महिलाएं बहुत सुस्त नज़र आती हैं। कई प्रकार के बहाने प्रस्तुत किया करती हैं उदाहरणतः यह के मैं बच्चे वाली जो हुई, कपड़े किस प्रकार पवित्र रखूं कि नमाज़ पढ़ूं, लेकिन क्या कपड़े पवित्र रखना कोई ऐसा कठिन कार्य है जो हो ही नहीं सकता। ऐसा तो

नहीं है यदि सावधान रहा जाए तो कपड़े पवित्र रह सकते हैं। यदि सावधान नहीं रहा जाए तो क्या यह भी नहीं हो सकता एक जोड़ा ऐसा बनवा लिया जाए जो केवल नमाज़ पढ़ने के समय पहन लिया जाए और यदि कोई महिला ऐसी ही गरीब है कि दूसरा जोड़ा नहीं बनवा सकती है उसे भी नमाज़ माफ नहीं। वह गंदे कपड़ों में ही नमाज़ पढ़ ले।

प्रथम तो इंसानियत चाहती है कि इन्सान पवित्र और साफ़ रहे इसलिए यदि कपड़ा अपवित्र हो जाए तो उसे साफ़ कर लेना चाहिए लेकिन यदि मान लिया जाए कि कोई ऐसी अवस्था है जिस में साफ़ नहीं किया जा सकता तो भी नमाज़ नहीं छूट सकती।

नमाज़ छोड़ने वाले

قُلْ لِّلْعِبَادِیَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ तो उन्हें कह दो कि वे नमाज़ों को हमेशा और समस्त शर्तों को पूरा करते हुए अदा किया करें और अपनी धन सम्पत्ति को छुप छुप कर और खुलेआम भी खर्च किया करें। इस आदेश से मेरे निकट यह परिणाम निकलता है कि जो व्यक्ति एक नमाज़ भी जानबूझ कर छोड़ता है वे नमाज़ी नहीं कहला सकता। (फर्मूदात पृष्ठ 34-36)



पृष्ठ 22 का शेष

संसार से चल बसे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी अत्यंत चमकते हुए पूरी हो गई। हत्यारे की बहुत तालाश हुई और आर्यों ने बहुत हाथ पैर मारे और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के खिलाफ़ रिपोर्ट कर के आप के मकान इत्यादि की तलाशी इत्यादि भी करवाई गई परन्तु जो बात झूठी थी उसका निशान कैसे मिलता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सख्त से सख्त क्रसम खा कर हलफिया बयान किया कि हमें इस बात का ज्ञान नहीं है कि पंडित लेखराम का कातिल कौन था और उसने उसे क्यों मारा। हम सिर्फ़ इस बात को जानते हैं कि यह एक खुदाई तकदीर थी जो अपना काम कर गई। आपने लिखा की मारने वाला कोई इन्सान था अथवा फरिश्ता था जो भी हो वह खुदा का एक रहस्मयी हथियार था जिसका हमें कोई ज्ञान नहीं। आप ने यह भी फ़रमाया कि बेशक हमें इस लिहाज़ से खुशी है कि खुदा की बात सच्ची निकली और इस्लाम का बोल बाला हुआ परन्तु मानवीय हमदर्दी के कारण हमें अफ़सोस भी है कि पंडित लेखराम की ऐसी असमय मृत्यु हुई और उनके संबंधियों को सदमा पहुंचा।

(सिलसिला अहमदिया जिल्द 1, पृष्ठ-44-47) शेष.....



मिरकातुल यक्रीन फी हयाते नूरुद्दीन

(हज़रत मौलवी नूरुद्दीन^{रज़ि} खलीफ़तुल मसीह प्रथम की जीवनी)

(भाग- 15)

अनुवादक - फ़रहत अहमद आचार्य

धर्म और आस्था

(हज़रत हकीम नूरुद्दीन साहिब खलीफ़तुल मसीह प्रथम के अपने शब्दों में)

(खुत्बा जुमा 23 अगस्त 1907 ई०)

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ - أَمَّا بَعْدُ -

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ -

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَقَّ تَقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُسْلِمُونَ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ

(आले इमरान 103-106)

اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا - عَذَابٌ عَظِيمٌ -

फ़रमाया- तुमने सुना होगा कि जब कभी मैं कोई खुत्बा पढ़ता हूँ वह खुत्बा जुमे का खुत्बा हो या ईद का, कोई लेक्चर हो या कोई उपदेश हो, तो मेरी आदत है कि उसके आरंभ में 'अशहदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीकलहू व अशहदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु' पढ़ लेता हूँ यद्यपि मेरी आदत नहीं कि अपनी हर एक हरकत और बात को ऊंची आवाज़ से ज़ाहिर करूँ, मगर जब कोई लंबी बात या दर्दमंद दिल की बात करनी हो तो उससे पहले मैं यह अवश्य

LIYAKAT ALI

Ph. 9899221402

9899221457

FENLEYROSH

Fenley Rosh Healthcare Pvt. Ltd.

Frequentideas Group City Quay

Liverpool L3 4fD United Kingdom

c-5/1015.2ndfloor,

opposite CISF Group Center

New Vasant Kunj, Road, New Delhi-37

011-3231790

www.fenleyrosh.com | info@fenleyroshhealthcare.com

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ

(سورہ بنی اسرائیل، آیت 31)

بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ○

Prop.

Sk. Riyazuddin

Moblie: 9437188786

9556122405

KING TENT HOUSE



At. Ashram Chak, P.O. Soro, Distt. Balasore, ODISHA

पड़ता हूं और मेरा उद्देश्य इससे यह होता है कि वे लोग जो मेरी नसीहत सुनते हैं इस बात के गवाह रहें कि मैं खुदा तआला को उसकी ज्ञात और सिफात में वाहिद ला शरीक (अद्वितीय और एक) मानता हूं और मैं दिल के विश्वास से और दृढ़ संकल्प से यह बात कहता हूं कि मैं उसकी कुदरतों को बयान करते हुए कभी शर्मिंदगी नहीं उठाता। मैं उसे अपना महबूब मानता हूं और मुहम्मद रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को समस्त नबियों का सरदार और समस्त अवतारों का गर्व समझता हूं और मैं दयालु खुदा का शुक्र अदा करता हूं कि उसने केवल अपने फजल से मुझे उसकी उम्मत में से बनाया, उसके प्यारों में से बनाया, उसके धर्म से प्रेम करने वालों में से बनाया। उसके बाद मैं यह कहता हूं कि तुमने देखा होगा कि मैं बहुत बीमार हो गया था और मैंने कई बार विश्वास कर लिया था कि मैं अब मर जाऊंगा। ऐसी हालत में कुछ लोगों ने मेरा बहुत ध्यान रखा, सारी सारी रात जागते थे, उनमें से विशेष रूप से डॉक्टर सत्तार शाह साहब हैं, कुछ लोगों ने सारी-सारी रात दबाया और यह सब खुदा तआला की गफूरर रहीमियां हैं, सत्तारियां हैं जो उन लोगों ने बहुत मोहब्बत और श्रद्धा से हमदर्दी की। और याद रखो कि अगर मैं मर जाता तो इसी ईमान पर मरता कि अल्लाह अपनी ज्ञात और सिफात में अद्वितीय और भागीदार रहित है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसके सच्चे रसूल और खातामुल अम्बिया हैं और रसूलों का गर्व हैं। और मेरा यह विश्वास है कि हज़रत मिर्ज़ा साहब महदी हैं, मसीह हैं और मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे गुलाम हैं, बहुत नेक और सच्चे हैं। यद्यपि मुझसे ऐसी सेवा नहीं हुई जैसी की होनी चाहिए थी बल्कि एक कण भी अदा नहीं हुई। मैं आज

METRO PLASTIC PRODUCTS
YUBA
QUALITY FOOTWEAR
 E-mail: yuba.metro@yahoo.com
 {AN ISO 9001:2008 CERTIFIED COMPANY}
 HO & FACTORY: 20 A RADHANATH CHOUDHURAY ROAD
 KOLKATA 700015, PH: 2328-1016

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ كَانَ
 (سورة النحل، آية 31) عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا

LUCKY BATTERY CENTRE
 BATTERY & DIGITAL INVERTER

 Thana Chhak, NH-5 Soro
 Balasore, Odisha
 Pin 756045
 e-mail : abdul.zahoor786@gmail.com
 Mob. : 09438352786, 06788221786

अपने जीवन का एक नया दिन समझता हूँ। यद्यपि तुम यह बात नहीं समझ सकते मगर अब मैं एक नया इंसान हूँ और एक नई सृष्टि हूँ। मेरी शक्तियों पर, मेरी आदतों पर, मेरे दिमाग पर, मेरे अस्तित्व पर, मेरे स्वभाव पर जो इस बीमारी ने प्रभाव डाला है मैं कह सकता हूँ कि मैं एक नया इंसान हूँ। मुझे किसी की परवाह नहीं, मैं तनिक भी किसी की खुशामद नहीं कर सकता। मैं बिल्कुल अलग-थलग हूँ। मैं केवल अल्लाह तआला को अपना माबूद (उपास्य) समझता हूँ। वही मेरा रब है क्योंकि इस बात का भरोसा नहीं कि आईंदा सप्ताह तक मेरा जीवन है या नहीं। अतः मैं तुमको बताना चाहता हूँ कि खुदा तआला फरमाता है कि संयम धारण करो और अपनी अंतरात्मा को ऐसा पवित्र कर लो जैसा कि होनी चाहिए। खुदा तआला बहुत पवित्र, कुद्दूस और सबसे बढ़कर पुनीत है। उस के दरबार में सम्माननीय भी वही हो सकता है जो स्वयं पवित्र हो, गंदा आदमी कुबूलियत हासिल नहीं कर सकता। देखो एक पाक साफ और अच्छे वस्त्रों वाला आदमी एक पेशाब वाली गंदी जगह पर नहीं बैठता। इसी प्रकार एक पवित्र खुदा एक गंदे को अपना सानिध्य प्राप्त नहीं बना सकता। इसीलिए उसने सच्चों के लिए जन्नत और दुष्टों के लिए नर्क बनाया है। एक अपवित्र व्यक्ति तो जन्नत के योग्य भी नहीं होता अल्लाह तआला के सानिध्य के योग्य कब हो सकता है? (पृष्ठ-53-55) शेष.....



Asifbhai Mansoori 9998926311	Sabbirbhai 9925900467
<p>LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE</p>  <p>Your's CAR SEAT COVER</p> <p>Mfg. All Type of Car Seat Cover</p>	
<p>E-1 Gulshan Nagar, Near Indira Nagar Ishanpur, Ahmadabad, Gujrat 384043</p>	

<p>Sayed K. A. Rihan, M.B.A. Proprietor Tel: 9035494123/9740190123</p> <p>B.M.S.ENTERPRISES INDUSTRIAL UTILITY SOLUTIONS</p> <p># 21, Erannappa Layout Ambadkar Main Road, Mahadevapura, Bangalore - 560 048 E-mail: bmsentrprises@gmail.com</p>

वह, जिस पे रात सितारे लिए उतरती है (2)

लेखक - आसिफ महमूद बासित साहिब

(भाग - 9) अनुवादक - इब्नुल मेहदी लईक M.A.

कुछ समय हुआ हज़रत मूसा की 'यदे बैज़ा' वाली घटना की व्याख्या बयान फर्मूदा हज़रत अलमुस्लेह मौऊद रज़ि पढ़ने का अवसर मिला। हुज़ूर रज़ि ने फ़रमाया है कि इससे मुराद हिदायत और मार्गदर्शन भी हो सकता है जो इस हाथ के द्वारा मूसा अलैहिस्सलाम की क्रौम को प्राप्त होने वाला था परंतु इससे अमलन यह मुराद भी हो सकती है कि आप अलैहिस्सलाम के हाथ से वास्तव में प्रकाशमयी किरणें निकली हों क्योंकि अल्लाह तआला अपने चुने हुए बन्दों को ऐसा नूर प्रदान फ़रमाता है जो उनके वजूद से निकलकर दूसरों में दाखिल हो जाता है। हुज़ूर रज़ि फ़रमाते हैं कि कई बार लोग मेरे पास आते हैं कह कुछ और रहे होते हैं परंतु मुझे उनके अंदर कुछ और दिखाई दे रहा होता है। कई बार कोई ज़ाहिरी तौर पर मेरे हाथ को चूम रहा होता है परंतु मुझे महसूस होता है कि मेरे हाथ पर गंदगी मल रहा है।

यह पढ़कर दिल भय से भर गया। हम भी तो सय्यदना हज़रत खलीफ़तुल मसीह की सेवा में उपस्थित होते हैं यद्यपि हमें तो आंख उठाकर देखने का भी साहस नहीं होता परंतु हुज़ूर तो हमें देख रहे होते हैं यद्यपि यह अत्यंत ही बरकत और सौभाग्य का कारण है कि हुज़ूर की मुबारक दृष्टि हम पर पड़ जाए परंतु इस दौरान हमारे व्यक्तित्व के prism का कौन सा भाग सामने आ जाए और अल्लाह तआला उन्हें हमारे अंदर की क्या अवस्था बता दे। क्या पता होता है। कई दिन तक इस भय की अवस्था



REHAN'S

REHAN INTERNATIONAL

WE ARE ON


 

Ph: 7702857646

rehaninternational@gmail.com


We accept All Debit & Credit Cards

Urfan Ahmed Saigal
9550147334
deco.leathers@gmail.com

**DECO**
DL
LEATHERS

Genuine Quality

We Undertake Complimentary Orders Also Manufacture



Address: 1/1/129, Alladin Complex 72, SD Road
Clock Tower, Beside Kamar, Hotel, Secunderabad-3

रही जैसी टूटी-फूटी दुआ करनी आती है, वह खुदा के समक्ष की भी। यही इच्छा थी कि अल्लाह तआला पर्दापोशी का सलूक फ़रमाता रहे। बाहर से मैं जो भी बनता फिरूं अंदर का हाल तो खुद मुझे मालूम है या मेरे खुदा को कि वहां तो कोई भी ऐसी बात नहीं जो हुज़ूर हम में देखना चाहते हैं। प्रत्येक स्थान पर हर भाग पर कमज़ोरी और आलस्य के सिवा कुछ भी नहीं। अल्लाह की पर्दापोशी ही है कि गुज़ारा हो रहा है और हुज़ूर की दया प्राप्त है। हे अल्लाह! यदि कभी तेरे इस चुने हुए बंदे ने मेरे अंदर की अवस्था जान ली तो क्या होगा।

अल्लाह की बड़ी कृपा हुई कि उन्हीं दिनों हज़रत मुस्लेह मौऊद^{रज़ि} की पुस्तक 'मंसबे ख़िलाफ़त' भी पढ़ने का अवसर मिला जिसमें आप ^{रज़ि} ने एक ख़लीफ़ा के काम बयान करते हुए फ़रमाया है कि जो नबी के काम हैं वही ख़लीफ़ा के काम होते हैं। यत्लू अलैहिम आयातेहि व यु-ज़क्किहिम तो दिल की कुछ ढाढस इस तरह बंधी के यदि हम गुनाहगारों की पवित्रता का कार्य भी ख़लीफ़ा के सपुर्द है तो वह हमारी बीमारी देखेगा तो इलाज करेगा इसके बिना तो संभव नहीं। अपितु अल्लाह तआला ने उन्हें यह सामर्थ्य दे कर हमारी लज्जा यूं रख ली के जो बातें हम अत्यंत शर्मनाक समझते हैं और कहने का साहस कर ही नहीं सकते वह अल्लाह उन्हें खुद समझा देता है। अपितु अल्लाह का बहुत बड़ा एहसान उस व्यक्ति पर होगा जिसके अंदर का हाल ख़लीफ़ा वक्त जान ले और उस को पवित्र कर दे।

यूं दिल ने तसल्ली पकड़ी और उसके बाद न केवल हुज़ूर की सेवा में अपनी कमज़ोरियों को बयान करने का साहस मिला अपितु जब-जब लगा कि हुज़ूर ने इस समय दिल के अंदर देख लिया है और कुछ फ़रमाया है तो उसे सच्ची बात समझ कर मान लिया। वह स्थान बहस करने का स्थान नहीं। वहां सफाईयां देने की गुंजाइश नहीं। वहां झूठी बातें भी बयान नहीं हो सकती। और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ तो अपने सामने बैठे अपने गुलामों की इस सीमा तक शर्म रखते हैं कि कभी सीधे सवाल नहीं किया (प्रबन्धकीय मामलों के अतिरिक्त के जहां यह नागुज़ेर हो जाए) व्यक्ति के हिसाब से हमेशा इशारों में बात समझा दी। समझने वाला समझ ले तो खुशनसीब न समझे तो निस्संदेह अत्यंत बदनसीब।

उदाहरण स्वरूप यदि कभी फ़रमाया कि अपने साथ काम करने वालों का खयाल भी रखते हो या अफ़सरी झाड़ते रहते हो ? तो इसका उत्तर कदापि कदापि यह नहीं कि नहीं नहीं..... मैं तो ऐसा नहीं हूं..... मैं तो बड़ा शफीक हूं..... मैं तो ऐसा कर ही नहीं सकता..... इसका उत्तर केवल यह है कि हुज़ूर प्रयास तो करता हूं कि खयाल रखूं लेकिन हुज़ूर दुआ करें कि अल्लाह तआला और

LOVE FOR ALL HATRED FOR NONE



SAKTI BALM



INDICATION: SHAKTI BALM GIVES RELIEF FROM STRAINS CUT, LUMBAGO COUGHS, COLD, HEADACHE AND OTHER ACHE SAND PAINS FOMENTATION OF THE AFFECTED PART HELPS TO RELIEF PAIN QUICKLY.

AYURVEDIC PAIN BALM

Prop: SK.HATEM ALI

ALL INDIA AVAILABLE

★ SOUTH 24 PARGANA, DIAMOND HARBOUR, WEST BENGAL ★

भी अधिक खयाल रखने का सामर्थ्य प्रदान करे"। हमें क्या पता कि आज तो हम समझ रहे हैं कि हम में यह बुराई नहीं परंतु आगे जाकर पैदा होने वाली हो। हमारे कौन से अमल के कारण खुदा तआला हमारे दिलों से रहम उठा ले और हम बेरहम बन कर रह जाएं। अतः ऐसे अफ़सरो पर उस हस्ती की सेवा में दुआ की दरख्वास्त करने से अधिक और कुछ नहीं करना चाहिए। परंतु वह स्वयं फ़रमाता है कि मैं इसका कुछ भाग अपने फ़स्तादों को भी देता हूँ।

(पृष्ठ-16-18)



पृष्ठ 22 का शेष

प्रश्न 17 आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दावा नबूव्वत के बाद कितनी उम्र पाई ?

उत्तर :- करीबन 23 साल।

प्रश्न 18 आप की वफ़ात पर हज़रत हस्सान बिन साबित ने जो शेर्यर कहे थे, लिखें।

كُنْتُ السَّوَادَ لِنَاظِرِي فَعَمِيَ عَلَى النَّاطِرِ
مَنْ شَاءَ بَعْدَكَ فَلَيْمَتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ أَحَاذِرِ

उत्तर :-

कुन्तस्सवाद लिनाज़िरी फअमिया अलैकन्नाज़िरु

मन शाअ बअदका फ़लयमुत फ़अलैका कुन्तु ऊहाज़िरु

अर्थ:- कि हे मेरे हबीब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप तो मेरी आंख की पुतली थे। पस आप की वफ़ात से मेरी आँख अन्धी हो गई। आप के बाद जो चाहे मरे। मुझे तो आपकी मौत का ही डर था।

Ziyafat Khan
Mobile 09937845993

Love For All Hatred For None



दुआओं का आवेदक

WASIMA STONE CRUSHER

Pankal, Near Nuapatna Town,
Distt. Cuttack (Odisha)

إِنَّ رَبَّكَ يَسْطُرُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَعْلَمُ - إِنَّهُ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا
(سورة النحل آية 31)

Mob. : 09986670102
09036915406

Prop.
Fazal-e-Haq Anwar-ul-Haq
Eajaz-ul-Haq Rizwan-ul-Haq



Al-Fazal Garments

Specialist in : School Uniform, Tai, Belt,
Jeans, T-Shirts, Shirts etc.

Opp. Krishna Gramina Bank, Beside Sana Medical,
Main Road, Yadgir, Karnataka

दीनी मालूमात (धार्मिक ज्ञान)

खतमुल मुरसलीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

प्रश्न 14 आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन बादशाहों के नाम तबलीगी खुतूत लिखे, उनमें से कुछ का नाम लिखें।

उत्तर :- (1) हिरकल- कैसरे रोम (2) खुसरो परवेज़-किसरा ईरान (3) अस्माहा नज्जाशी हबशा का राजा (4) मुकोकस - मिस्र का राजा (5) हारिस बिन अबी समर - सरदार ग़स्सान (6) हुदा बिन अली - यमामा का सरदार (7) मुनजर तैमी - बहरैन का सरदार ।

प्रश्न 15 आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई शेयर लिखें।

उत्तर :- أَنَا النَّبِيُّ لَا كَذِبَ أَنَا ابْنُ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ

अनन नबिय्यो ला कजिब आनबनो अब्दुल मुतालिब।

अर्थात् मैं झूठा नबी नहीं हूँ। मैं अब्दुल मुतालिब का बेटा हूँ।

प्रश्न 16 आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात कब और किस उम्र में हुई। आप का रौज़ा मुबारक कहाँ है ?

उत्तर :- आप 26 मई 632 ई. बमुताबिक प्रथम रबीउल अव्वल 11 हिजरी को 63 साल की उम्र में रफीके आला (अल्लाह तआला) से जा मिले। आप मदीना मुनव्वरा में हज़रत आयशा के हुजरा (कमरा) मुबारक में दफ़न हैं।

शेष पृष्ठ 31 पर

يُنْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّاعَةَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ ثَمَرٍ ثَلَاثَ لَيَالٍ يَتَغَنَّيُ فِيهَا قُلُوبُ الْمُؤْمِنِينَ (سجدة: 32)

Prop : Sk. Ishaque

Phangudubabu : 7873776617
Papu : 9337336406
Lipu : 9778116653

FAIZAN FRUITS TRADERS

Near Railway Gate, Soro, Balasore, Odisha - 756045

PAPU LIPU ROAD WAYS
All India Truck Supplier
Papu : 9337336406, Lipu : 9437193658, 9778116653,

Sayed Wasim Ahmad

Mobile 99937238938

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

RUKSAR AGENCY

Pran Juice, Gandour Food Products, Monginis Cake, Raja Biscuit etc.

Mubarakpur, At. Soro, Distt. Balasore (Odisha)